Lecture (53)

शिवाजी का प्रशासन

Presented by - Mamta Rani
Guest Assistant Professor.
SNSRKS COLLEGE, SAHARSA
Department of History

शिवाजी का प्रशासन :-

शिवाजी के प्रशासन को मराठा प्रशासन भी कहा जाता है। शिवाजी संगठनकर्ता, कुशल नेतृत्वकर्ता, और महान प्रशासक थे। इनके बाद बाजीराव-I को कुशल प्रशासक माना गया है। अध्ययन की सुविधा के लिए हमलोग इस प्रशासन को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं। जैसे —

(i) केन्द्रीय प्रशासन :-

शासक :-

इस प्रशासनिक व्यवस्था में शिवाजी सर्वोच्च अधिकारी थे। यह व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका के भी सर्वोच्च अधिकारी थे।

मंत्रिपरिषद :- प्रशासन में शिवाजी को सहयोग करने के लिए सचिवालय स्तर का मंत्रिपरिषद गठित किया गया था, जिसको हुजूर-ए-दफ्तर कहा गया है। इस मंत्रिपरिषद में आठ सबसे प्रमुख मंत्री थे, जिनको अष्टप्रधान कहा गया।

- अष्टप्रधान शिवाजी के राजदरबार में रहते थे।
- अष्टप्रधान का वर्णन निम्नलिखित है —

शब्दावली	अर्थ
पेशवा	प्रधानमंत्री
सुमन्त	विदेशमंत्री
अमात्य	वित्तमंत्री
सर-ए-नौबत	सेनापति

वाकयानवीस - गृहमंत्री। गुप्तचर विभाग का प्रधान
चिटनीश - राजकीय पत्र व्यवहार देखने वाला अधिकारी
पुरोहित - धार्मिक मामलों का अधिकारी
न्यायाधीश - न्याय करने वाला अधिकारी।

सैन्य प्रशासन :- मावल प्रदेश के सैनिक इनकी सेना में सबसे अधिक थे। पैदल सैनिक को पायक कहा गया है। शिवाजी का सबसे मजबूत पक्ष स्थायी सेना था, जिसको पागा कहा गया है। यह अश्वारोही सेना होता है, जिसका दो भागों में विभाजन किया गया था। जैसे -

① सिलहदार - वैसे सैनिक जिनको अश्व के साथ-साथ सभी आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था स्वयं करना होता था, उसको सिलहदार कहते थे।

② बरगीर :- वैसे सैनिक जो सभी आवश्य अश्व के साथ-साथ सभी आवश्यक वस्तुओं की व्यवस्था सरकार की तरफ से स्वीकार करते थे।

शिवाजी ने तोप और गोला बारूद फ्रांसीसियों से प्राप्त किया था। इन्होंने जंजीरा द्वीप (अरब सागर) में स्थित सिद्दियों से मुकाबला करने के लिए दरिया सारंग के नेतृत्व में एक जलबेड़ा का गठन किया था।

- शिवाजी का जलबेड़ा मुंबई के समीप कोलाबा में स्थित था
- शिवाजी ने अपने सभी अधिकारियों को वेतन में भूमि के बदले नगद वेतन देने की व्यवस्था को लागू किया था।